श्रीपरमात्मने नमः।

जैनस्त्रीशिक्षा।

(द्वितीय भाग)

संयुक्तवर्णोंकी शिक्षा।

हलवर्ण*

क् ख् ग् घ् ङ् च् छ् ज् झ् ञ् ट् ठ् ड् ढ् ण् त्
थ् द् ध् न् प् फ् ब् भ् म् य् र् ल् व् श् ष् स् ह्

(नोट—उपर्युक्त वर्णोंको हल् अथवा व्यंजन कहते हैं. स्वरोंके संयोग विना उपर्युक्त ककारादि हल्वर्ण उच्चारण करनेमें नहिं आते, किन्तु आधा उच्चारण होता है. जब ये वर्ण हल् (स्वरके संयोगरहित, निखालिस) होते हैं तो प्रायः अगले अक्षरमें मिल जाते हैं. इस मिलनेको संयोग कहते हैं और मिले हुये अक्षरोंको संयोगी अक्षर अथवा संयुक्ताक्षर व संयुक्तवर्ण कहते हैं. सो कौनसा अक्षर कौनसे अक्षरके साथ किस रीतिसे मिलता है और उनका उच्चारण कैसे होता है वह क्रमसे दिखाया जाता है.)

---

* पाठिका महाशया! हल् अक्षरोंका स्वरूप व संयुक्त होने-का कारण बालिका व स्त्रियोंको भले प्रकार समझा देवें.

पाठ पहिला यकारयोग।

क् य क्य शक्य ऐक्य वाक्य अशक्य त्रैलोक्य।
ख् य ख्य मुख्य संख्या अख्याति विख्यात।
ग् य ग्य योग्य भोग्य आरोग्यता योग्यता।
च् य च्य वाच्य अवाच्य शौच्य अच्युत।
छ् य छ्य छ्यासठ छ्यानवे छ्यालीस।
ज् य ज्य राज्य भोज्य विभाज्य भैषज्य।
ट् य ट्य नाट्य अकाट्य कापट्य नैकट्य।
ठ् य ठ्य पाठ्य अपाठ्य शाठ्य सुपाठ्य।
ड् य ड्य जाड्य जाड्यदोष ताड्यमान।
ढ् य ढ्य आढ्य धनाढ्य गुणाढ्य वैताढ्य।
ण् य ण्य पुण्य नैपुण्य अरण्य हिरण्य।
त् य त्य नित्य सत्य अपत्य मृत्यु हत्या।
थ् य थ्य मिथ्या तथ्य पथ्य कुपथ्य अकथ्य।
द् य द्य विद्या विद्यावान् विद्यावती।
ध् य ध्य साध्य असाध्य आराध्य ध्यान।
न् य न्य अन्य धन्य न्याय कन्या जघन्य।
[illegible] प्य प्यार प्यारा जाप्य आलाप्य।

भ् य भ्य सभ्य असभ्य अभ्यास अभ्यागत ।
म् य म्य शाम्य गम्य रम्य अगम्य शाम्यभाव ।
य् य य्य शय्या न्याय्यवचन साहाय्य ।
ल् य ल्य बाल्य तुल्य अमूल्य त्रैकाल्य ।
व् य व्य काव्य सेव्य व्यय अव्यय व्याह ।
श् य श्य वैश्य वेश्या अवश्य आवश्यक ।
ष् य ष्य शिष्य पुष्य पौष्य दूष्य विशेष्य ।
स् य स्य हास्य शस्य निरालस्य वैमनस्य ।
ह् य ह्य बाह्य साह्य सह्य असह्य लेह्य ।

ऐक्य विना जैन-जातिका सुधार होना अशक्य है। बुरा काम करनेसे अख्याति (निंदा) होती है। योग्य अयोग्यका विचार कर योग्य होय सो करना। कुकथा कुवचन कदापि वाच्य (कहने योग्य) नहीं। कुराजाके राज्यमें रहना अनेक दुःखोंका कारण है। कापट्य (मायाचार) अनेक दोषोंकी खानि है। साधुजनोंमें शाठ्य (दुर्जनता) नहिं होता। शाठ्य (दुर्जनता) जाड्य (मूर्खता) छोड गुण सीखकर

गुणाढ्या बनो। अठारह दोषरहित वीतराग (अरहंत) देव ही पूज्य (पूजा करने योग्य) हैं वीतरागदेवके सिवाय अन्य सब देव अपूज्य हैं। पुण्यसे ही हिरण्यमय आभूषण मिलते हैं। जो कन्या नित्य सत्य वचन बोलती है वही जैनकन्या है। पथ्यभोजन करनेसे आरोग्यता रहती है। संसारमें विद्याधन ही परम (बडा) धन है। विद्याध्ययनमें हरसमय ध्यान रखनेसे असाध्य विद्या भी साध्य होजाती है। न्यायसे विचार किया जाय तो पृथिवीमें परोपकारीका ही जीवन धन्य है। गुणवती कन्या सबको प्यारी लगती है। नित्यका पढा हुवा पाठ नित्य ही अभ्यास (याद) कर लेना चाहिये। न्याय विद्या पढनेसे अगम्य पदार्थ भी गम्य हो जाता है। न्यायवचन कहनेमें भय किसका। विद्या पढनेके लिये बाल्यकालके तुल्य अन्य कोई अमूल्य समय नहीं है। चतुर औरतोंका समय काव्यामोदमें ही व्यय होता है। दयावती व्

सुशीला बननेकी अति आवश्यकता है। शिष्याके ऊपर पाठिकाका बडा अनुराग होता है। लड़ाईका मूल हास्य (हंसी) करना है। कटुवचन व हास्यवचन सह्य करनेवाले साधु (सत्पुरुष) होते हैं।

चौपाई १६ मात्रा।

कटुक वाच्य कबहू नहिं कहना।
शील नारिका मुख्य सु गहना॥
योग्य वचन है वाच्य सदा हीं।
दुःख न होय सुराज्यन माहीं॥ १॥
पतिनेकथ्य कपट नहिं करना।
नाटक पाव्य माहिं चित धरना॥
जाड्यदोप नारिनका हरहू।
गुण दे सब हि गुणाढ्या करहू॥ २॥
पुण्यकाम चितसे नित करना।
सत्य वचन कहते नहिं डरना॥
भोजन पथ्य बनाओ प्यारी।
विद्याध्य[illegible] नहुत सुखकारी॥ ३॥

नम्रीभूत होकर रहना ही उचित है। हिंसा झूठ चोरी कुशील और परिग्रह इन पांच पापोंको मन वचन कायसे त्याग देना सो तो पांच महाव्रत हैं और एक देश (यथाशक्ति) त्यागना सो श्रावकके पांच अणुव्रत हैं। पतिके आश्रय विना पतिव्रताका जीवन कठिन है। पतिव्रता सहस्रोंमें एकही होती होगी। मायाचारसे दांपत्यप्रेमका ह्रास हो जाता है।

चौपाई १६ मात्रा।

क्रोध रु वक्रभाव दुखकारी।
इनको ग्रहण करो मत प्यारी॥
भले कामको शीघ्र हि करना।
नित सुपात्रनका दुख हरना॥ १॥
दिनमें निद्रा मत लो बहना।
पतिको प्रियतम प्रियवच कहना॥
परपुरुषनको भ्राता जानो।
गुरुजन चरण नम्रता ठानो॥ २॥
शील महाव्रत चितमें धारो।
तन मन धन परिश्रम कर पारो॥

शीलवंती सहसों थीं नारीं ।
हास भई इस काल मझारी ॥ ३ ॥

पाठ तीसरा रकारयोग ।

र् क र्क अर्क तर्क कर्कश कर्कशा संपर्क ।
र् ख र्ख मूर्ख मूर्खा मूर्खता मूर्खजन ।
र् ग र्ग स्वर्ग वर्ग संसर्ग कुसंसर्ग मार्ग विसर्ग ।
र् घ र्घ अर्घ दीर्घ सुदीर्घ महार्घ दुर्घट ।
र् च र्च अर्चा चर्चा मार्च खर्च अर्चित ।
र् छ र्छ मूर्छा मूर्छित मूर्छारहित मूर्छावान् ।
र् ज र्ज दुर्जन निर्जन अर्ज अर्जन उपार्जन ।
र् झ र्झ निर्झर निर्झरजल झर्झर झर्झररव ।
र् ण र्ण अर्णव निर्णय विदीर्ण अजीर्ण ।
र् त र्त गर्त आवर्त वर्तमान आर्तध्यान ।
र् थ र्थ अर्थ अनर्थ यथार्थ पदार्थ व्यर्थ ।
र् द र्द अर्द अर्दित निर्दय निर्दयता निर्दशन ।

१ व्याकरणकी रीतिसे रेफयुक्त अक्षर प्रायः द्वित्व—दो हो जाते हैं, किन्तु उनका उच्चारण नहिं बदलता जैसे धर्म्म कर्म्म पूर्व्वका । परंतु सुगमता होनेके कारण आज कल कोई भी दो नहिं लिखता इस कारण हमने भी द्वित्व नहिं लिखे ।

र् ध र्ध निर्धन निर्धूम दुर्ध्यान निर्धारित ।
र् न र्न दुर्नय दुर्नाम दुर्नामता ।
र् प र्प सर्प दर्प दर्पण अर्पित समर्पण ।
र् व र्व दुर्वल निर्वल दुर्वलता निर्वलता ।
र् भ र्भ गर्भ गर्भित निर्भय निर्भर गर्भाशय ।
र् म र्म शर्म धर्म कर्म अधर्म निर्मल ।
र् य र्य कार्य आर्य धैर्य पर्यटन पर्याय ।
र् ल र्ल दुर्लभ दुर्लभता दुर्लभ्य निर्लेप ।
र् व र्व गर्व गर्वित गर्वाशय दुर्विप ।
र् श र्श दर्शन दर्शित अर्शरोग परामर्श ।
र् ष र्ष हर्ष वर्ष हर्षित आकर्षण वर्षा वर्षण ।
र् ह र्ह गर्हा गर्हित अर्हित अर्हत् अर्हंत ।
कर्कश वचन कदापि नहिं बोलना चाहिये ।
मूर्खके दोषोंकी गिनती ही नहीं ।
खराब औरतोंका संसर्ग कदापि नहिं रखना ।
ढिलंगीसे काम करनेवालोंको दीर्घसूत्री कहते हैं ।
पढते समय अन्यचर्चा नहिं करना चाहिये ।
धनाढ्योंकी औरतें धनके मदसे मूर्छितसी हो

जाती हैं। परके दोप देखनेवाले दुर्जन होते हैं। दुर्जनका भरोसा करना मृत्युको बुलाना है। धन आदि परिग्रहसहित धर्मगुरुका संसर्ग व अर्घ देकर अर्चन पूजन कदापि मत करो।

जैनमतमें जीव अजीव आस्रव बंध संवर निर्जरा मोक्ष पुण्य और पाप ये नौ पदार्थ माने हैं। निर्झरनेके झर्झररवसे हृदय पुलकित होता है। अजीर्णता पर भोजन करना विपके तुल्य है। आर्तध्यान ही दुःखका मूल कारण है। अपना प्रयोजन साधे विना परका उपकार करना ही यथार्थ उपकार है। निर्दय लोग सदा दुःखी ही रहते हैं। निर्धन पंडितोंकी यथासाध्य धनसे सहायता करो, जो लोग देवताके सामने बकरे भैंसे काटकर अर्पण करते हैं तथा आगमें पशु होमनेको धर्म बताते हैं वे बडे निर्दयी पापी हैं, ऐसा कोई भी काम नहिं करना जिससे अपना दुर्नाम हो जाय। कुपात्रको दान देना सर्पको दूध पिलानेके तुल्य है। निर्बल जीवोंको तन मन

वंचन और धनसे सहायता करके निर्भय करो इसीको हमारे आचार्योंने अभयदान कहा है रूप धन आदिका गर्व कदापि नहिं करना चाहिये। गर्वगर्भित वचन कदापि नहि बोलना चाहिये। धर्मकर्म प्रेमके साथ सदैव ही करने चाहिये। विपतमें धैर्य गुण ही यथार्थ मित्र होता है। मनुष्य पर्याय और आर्यकुल (उत्तम कुल) पाना तथा विद्या पढनेकी सामग्री मिलना अतिशय दुर्लभ है, इसकारण गर्हित कार्य छोड हर्षित मन होकर नित्य प्रति अर्हत भगवानका दर्शन पूजन किया करो जिससे हृदय पवित्र होकर पूर्वभवके किये हुये पापोंका नाश और शुभ कर्मोंका आस्रव (आगमन) हो देवदर्शन किये विना भोजन कदापि नहिं करना. एकवर्ष तक बराबर पढनेसे पढना लिखना आ जाता है. "अहिंसा परमो धर्मो हिंसा सर्वत्र गर्हिता"

चौपाई १६ मात्रा।

कर्कश वचन कहे जो नारी।
सो अति मूर्ख महा दुखियारी॥

पतिव्रता तिय स्वर्गहिं जावे ।
दीर्घकाल लों अति सुख पावे ॥ १ ॥
खोटी चर्चा कबहु न करना ।
धन गृहादिमें मूर्छा हरना ॥
दुर्जनता चितसे तुम छारहु ।
निर्णयकर शुभव्रत धर पारहु ॥ २ ॥
आर्त्तध्यान करै जो नारी ।
सो यथार्थ दुख पावे भारी ॥
निर्दयता चितमें मत लावो ।
निर्धन पतिका धैर्य बढावो ॥ ३ ॥
निज तनका जो दर्प करै है ।
सो गर्वित तिय दुःख भरै है ॥
सब जीवनको निर्भय करना ।
धर्म कार्यपर नित चित धरना ॥ ४ ॥
दुर्लभ मनुष्य जनम यह लहना ।
पतिदर्शन कर हर्षित रहना ॥
गर्हित कर्म करै जो नारी ।
सो पतिकी कबहु न हो प्यारी ॥ ५ ॥

चमेली।

१। चमेली बड़ी सुशील लड़की है, इसकारण वह अपने माता पिता पिताको बड़ी प्यारी लगती है। माता पिता जो कुछ उपदेश देते हैं, चमेली उसको हमेशह याद रखती है। चमेलीके माता पिता जिस समय जो कार्य करनेको कहते हैं, वह तुरंत ही उस कार्यको करती है और वे जिस कार्यके करनेका निषेध (मनाई) करते हैं वह उस कार्यको कदापि नहिं करती।

२। चमेली मन लगाकर विद्या पढ़ती है। विद्या पढ़ने में कदापि अरुचि वा आलस्य नहिं करती, क्योंकि—वह हमेशह अपने मनमें विचारती रहती हैं कि "यदि बालकपनमें विद्या-भ्यास नहि करुंगी तो उमर भर दुःख पाउंगी।"

३। चमेली अपनी छोटी बहिन और छोटे भाई पर अतिशय प्यार करती है। उनके साथ कदापि लड़ाई झगड़ा नहि करती और न कभी उनपर हाथ उठाती है, खानेकी कोई चीज मिलती तौ अपने छोटे भाई बहनको विना दिये अकेली कदापि नहि खाती।

४। चमेली कभी भी झूठ नहिं बोलती। क्योंकि वह जानती है कि झूठ बोलनेवालेको कोई भी भला नहिं समझता और न कोई उसकी बातोंका पतियारा करता है, सब ही लोग उससे घृणा (घिन) करते हैं।

५। चमेली कभी भी कोई अनुचित कार्य (बुरा) नहि करती। यदि कभी भूल चूकसे हो भी जाय तो माता पिता वगै-

वह गुरुजनोंके धमकाने पर नाराज नहि होती। क्योंकि—वह अपने मनमें विचारती है कि—मैंने अनुचित कार्य किया था इस कारण मुझे माता पितादि धमकाते हैं। किंतु अब मैं ऐसा कार्य कदापि नहि करूंगी।

६। चमेली कदापि किसीको कटु वचन नहि कहती, कुवचन वा बुरी बात तो वह जवान पर भी नहीं लाती और न किसीके साथ कलह (लड़ाई) तथा मार पीट ही करती है अर्थात् जिस कामके करनेसे किसीके मनको दुःख हो, ऐसा काम चमेली कदापि नहि करती।

७। चमेली कभी भी पराई चीज उठानेके लिये हाथ नहि बढाती क्योंकि—वह जानती है कि—मालिककी आज्ञाके बिना परका द्रव्य ग्रहण करना सो चोरी है। चोरी करना बड़ा पाप है। जो लोग चोरी करते हैं उनसे सब लोग घृणा करते हैं।

८। चमेली पढ़ने लिखने वा घरके काम धंदेमें हमेशह परिश्रम करती रहती है। वह अपना जरासा भी समय वृथा नहि विताती। जिस समयका जो कार्य हो, उस समय चमेली उसी कार्यको मन लगाकर किया करती है। वह अपने पढ़ने लिखनेके समय कदापि नहि खेलती।

९। चमेली दुःशील (खराब) लड़के लड़कियोंके साथ कभी भी नहि खेलती वा फिरती है, वह भले प्रकार जानती है कि दुःशील बालक बालिकाओंके साथ खेलने तथा रहने से दुःशील (खराब) हो जाऊंगी।

[illegible]
[illegible]
बड हर्षके साथ ब्रहो कार्य करती है । अध्यापिका महाशयाकी आज्ञाके खिलाप कोई भी कार्य कदापि नहि करती इसी कारण अध्यापिका महाशया चमेली पर अतिशय प्यार (स्नेह) व कृपा रखती हैं ।

हे बालिकाओ ! जो तुम सुख चाहती हो तथा दुनियामें अपनी कीर्ति (बडाई) चाहती हो तो तुम भी अपनेको चमेली बाईकी समान सुशीला बनाओ ।

पाठ चौथा लकारयोग.

क् ल क्ल क्लेस क्लेसित क्लास संक्लेश ।
ग् ल ग्ल ग्लानि ग्लानिसहित ग्लाय ।
प् ल प्ल विप्लव प्लावन प्लुत प्लीहा ।
म् ल म्ल अम्ल अम्लान म्लेच्छ म्लानमुख ।
ल् ल ल्ल दिल्ली बिल्ली वल्लभ पल्लव उल्लास ।
श् ल श्ल श्लेष श्लोक अश्लील श्लाघा ।
ह् ल ह्ल आह्लाद प्रह्लाद आह्लादित ।

शिक्षार्थ ।

नीच औरतें ही सास सशुरको नानाप्रकार क्लेश देकर क्लेशित करती हैं रोगीको देख कर ग्लानि

करना अनुचित है। राजाके अत्याचारी होनेसे ही राज्यमें विप्लव (उपद्रव) होते हैं। प्रियपुत्रको म्लानमुख देखनेसे माताको वडा क्लेश होता है। पतिके देखनेसे पतिव्रताको वडा उल्लास होता है। अश्लील गालियें गानेसे ही औरतें विगड़ जाती हैं। तुम कदापि अपने मुखसे गाली वगैरह अश्लील वचन नहि बोलना। पतिकी सेवा करनेसे पतिव्रताओंको वडा आह्लाद होता है।

चौपाई १६ मात्रा।

क्लेशित जनपर करुणा करना।
ग्लानी तज उनका दुख हरना॥
अम्ल अधिकसे मति कर प्रीति।
विप्लव कारण राज अनीति॥ १॥
कर उल्लास पढै जो नारी।
सोई तिय पतिकी अति प्यारी॥
जो अश्लील गीत नित गावे।
सो नारी अतिशय दुख पावे॥ २॥

सोहन।

सोहन नामका लड़का एक दिन तीन लड़कोंके साथ किसी बागमें गया था, सोहनकी उमर कोई सात वर्षकी होगी। उस बागमें वे चारों लड़के हवा खाते हुये टहलते फिरते थे। गुलाबकी क्यारीमें गुलाबके पेडपर एक बहुत ही सुंदर फूल लगा हुआ था। उसको देखकर एक बडे लड़केने कहा कि—"चलो अपन वह फूल तोड़ लें!" यह सुनकर सात वर्षके सोहनने कहा कि—'भाई उस दिन पिताजीने कहा था कि—विना दिए परका द्रव्य लेना सो चोरी है, चोरी करना बड़ा पाप है। अगर तुम यह फूल तोड़ लोगे तो यह चोरी करना हुआ, सो भाई इसप्रकार पराई चीजपर लोभ करोगे तो तुमको कोई भी प्यार नहिं करेगा।

उस समय उस बागका मालिक भी वहांपर मौजूद था परंतु उन लड़कोंने उसे नहिं देखा था। उस छोटेसे लड़केके मुखसे यह बात सुनकर बागके मालिकने सोहनको झट गोदीमें उठा लिया और प्यार करके वह फूल उसको देकर कहा कि—तूने अपने पिताके उपदेशानुसार काम किया है इस करण यह फूल तुझे इनाममें देता हूं। मैं ही इस बागका! और फूलका मालिक हूं।

हे बालिकाओ! तुम भी सोहनकी तरह किसीकी चीज पर मन नहिं चलाना।

पाठ पांचवां वकारयोग।

क् व क्व पक्व अपक्व परिपक्व।
ग् व ग्व ग्वालिए दिग्विजय ग्वालियर।
ज् व ज्व ज्वर ज्वाला ज्वालामुखीपहाड।
ट् व ट्व खट्वा खट्वांग खट्वांगधारी।
त् व त्व मृदुत्व त्वरित मिथ्यात्व जडत्व।
थ् व थ्व पृथ्वी पृथ्वीराज पृथ्वीनाथ।
द् व द्व द्वार द्वारिका द्वादश द्वादशी।
ध् व ध्व ध्वंस साध्वी अध्व ध्वनि।
न् व न्व अन्वय अन्वेषण अन्वयसहित।
ल् व ल्व बिल्व बिल्वफल बिल्वग्राम।
श् व श्व अश्व विश्व विश्वनाथ विश्वास।
स् व स्व स्वाद निःस्वाद स्वजन स्वभाव।
ह् व ह्व विह्वल आह्वानन जिह्वा गह्वर।

शिक्षायें।

अपक्व फल खानेसे रोग होता है, ग्वालिए आनंदसे गइयें चराते हैं। ज्वालामुखी पहाडोंमेंसे आगकी ज्वालाएं निकला करती हैं। बरसातमें

खट्वा (खाट) पर सोना चाहिए। वालिकाओंको सवसे पहिले श्रावकाचारमें परिपक्व होना चाहिए। कुदेवको देव, कुगुरुको गुरु, कुधर्मको धर्म मानना सो मिथ्यात्व है। पृथ्वी नारंगीके समान गोल नहीं है किंतु थालीके समान गोलाकार है और समुद्रसे वेढी हुई है। वदमाश औरतोंकी संगति करना मृत्युका द्वार है। जो औरतें सदाचारिणी होती हैं वेही साध्वी हैं खलपुरुष परके दोष ही अन्वेषण किया करते हैं. अपक्व (कच्चा) विल्वफल संग्रहणीके रोगीको वहुत फायदा करता है। छिनाल औरतोंकी मीठी मीठी वातोंपर कदापि विश्वास नहीं करना। किसी द्रव्यका स्वभाव कभी नहीं जाता वेवकूफ औरतें शोकमें विह्वल हो जाती हैं।

चौपाई १६ मात्रा।

भोजन पक्व भये जो खावै।
ज्वरवाधा नहीं ताहि सतावै॥
जो मृदुत्व गुण चितमें धारहिं।

सो पृथ्वीमें यश विसतारहिं ॥ १ ॥
अभ्यागत निज द्वार हि जोवै ।
दान देय ताका दुख खोवै ॥
दारिद ध्वंस करइ सोई नारी ।
ताका अन्वय सदा सुखारी ॥ २ ॥
खल जनका विश्वास न करना ।
सुजन स्वभाव माहिं चित धरना ॥
विपत समय विह्वल नहि होवै ।
सोई तिय सबका दुख खोवै ॥ ३ ॥

पाठ छट्ठा णकार, नकारयोग ।

ण् ण ण्ण विपण्ण विपण्णवदन षण्णवति ।
ष् ण ष्ण श्रीकृष्ण विष्णु उष्ण ।
ह् ण ह्ण पराह्ण अपराह्ण पूर्वाह्ण ।
क् न क्न शक्नु अपशक्नु ।
ग् न ग्न मग्न रुग्न अग्नि भग्न नग्न लग्न ।
घ् न घ्न विघ्न कृतघ्न कृतघ्नी शत्रुघ्न विपघ्न ।
त् न त्न यत्न रत्न प्रयत्न रत्नाकर पत्नी ।
न् न न्न अन्न भिन्न खिन्न भिन्नता प्रसन्न किन्नर ।

प् न प्न स्वप्न स्वप्नदशा प्राप्नोति ।
म् न म्न निम्न निम्नग प्रद्युम्न आम्नाय ।
श् न श्न प्रश्न श्नी प्रश्नकर्ता ।
स् न स्न स्नेह सस्नेह स्नान स्नात अस्नात ।
ह् न ह्न चिह्न मध्याह्न वह्नि अह्नि ।
विपत्तमें विषण्ण होना मूर्खोंका काम है। अपराह्णके समय धूपकी बडी उष्णता होती है, इस कारण अपराह्णके समय धूपमें कदापि नहिं फिरना चाहिए। शक्नु (प्रियवादी) बालक सबका मन रंजन करता है। चिंतामें मग्न रहनेसे शरीर कृश हो जाता है। जो अपने उपकारीके किये हुये उपकारको नहिं मानता उसे कृतघ्नी कहते हैं। कृतघ्नी होना अतिशय अनुचित है सम्यग्दर्शन सम्यग्ज्ञान और सम्यग्चारित्रको रत्नत्रय कहते हैं। घरपर आये हुये दीन दुखियोंको दया करके अन्नदान देना चाहिये परका अकल्याण स्वप्नमें भी मत चाहो। जो लोग परका अकल्याण चाहते हैं, वे निम्नश्रेणी (नीच)

के मनुष्य हैं । अनुचित प्रश्न करना नीचोंका काम है । छोटे भाई भगिनीके प्रति अतिशय स्नेह रखना चाहिए । जीवोंकी रक्षा करना, पानी छानकर पीना और रात्रिको भोजन नहिं करना ये तीन जैनी (श्रावकके) के बाह्य चिह्न हैं।

चौपाई १६ मात्रा ।

गुण सहिष्णुताका सुखकारी ।
दुखके दिन लागत नहिं भारी ॥
फिर फिर यत्न करै जो कोई ।
भग्न मनोरथ कभी न होई ॥ १ ॥
यत्न किये विन विघ्न न जावै ।
अन्न दान विन यश नहिं पावै ॥
सुजन स्वप्नमें भी दुखदाई ।
वचन असत्य न बोलहिं भाई ॥
निम्नश्रेणीकी जो नारी ।
तासों स्नेह करहु मत प्यारी ॥
जो तीय अनुचित प्रश्न करै है ।
सो मूरखता चिह्न धरै है ॥ ३ ॥

सतवां पाठ मकारयोग।

क् म क्म रुक्मिणी हुक्म।
ग् म ग्म वाग्मी वाग्मीजन युग्म युग्मंधर।
ङ् म ङ्म वाङ्मय पराङ्मुख दिङ्मुख।
ण् म ण्म मृण्मय षण्मास षण्मात्र षण्मुख।
त् म त्म आत्मा वहिरात्मा अंतरात्मा परमात्मा।
द् म द्म पद्म पद्माकर पद्मिनी छद्म छद्मवेशी।
न् म न्म जन्म सन्मति चिन्मय तन्मय।
म् म म्म सम्मति सम्मानित सम्मान असम्मत।
ल् म ल्म गुल्म जुल्म शाल्मली कल्मष।
श् म श्म रश्मि कश्मीर पश्मीना श्मशानभूमि।
ष् म ष्म ऊष्म ग्रीष्म आयुष्मान् आयुष्मती।
स् म स्म स्मर स्मरण भस्म अस्म स्मृति विस्मय।
ह् म ह्म ब्रह्म ब्राह्मण ब्रह्मज्ञानी जिह्म।

शिक्षायें।

कृष्णजी रुक्मिणीको हरण कर लाये थे। वाग्मी जनोंके वाक्यविन्यासद्वारा हृदय प्रफुल्लित हो जाता है। धर्मके कार्योंसे पराङ्मुख [illegible]

नहीं। खराब औरतोंकी मित्रता मृण्मय पात्रके समान होती है। जिनमतमें आत्माके बहिरात्मा, अंतरात्मा और परमात्मा ये तीन भेद किये हैं। जिसके शरीरमें पद्मकी गंध आती हो, वही पद्मिनी है। विद्याहीन नारीका जन्म ही वृथा है। चतुर औरतोंका सब जगह सम्मान होता है। कन्याओंको धर्मग्रन्थ नहिं पढाना माता पिताओंका जुल्म है। केशर और पश्मीनी दुशाले कश्मीर देशमें होते हैं। शीतकालमें कुयेका जल और बटकी छांह ऊष्म (गर्म) रहती है। पाठिकाके सदुपदेश व पढी हुई विद्याको स्मरण रखनेसे ही सुख होता है। ब्रह्मको जाने सो ब्राह्मण होता है।

चौपाई १६ मात्रा।

हुक्म न लोप करहु गुरुजनका।
न हो पराङ्मुख दुख हर उनका॥
वाग्मीजन सब हरत अनीती।
परमात्मापद जोर हि भीति॥ १॥

भ्रमर पद्ममें तनमय होवे।
सम्मूल हि निजप्राण सु खोवे॥
रविकी रश्मि ऊष्म अति होवे।
भस्म रमाये ब्रह्म न जोवे॥ २॥

आठवां पाठ मिश्रयोग।

क् क क्क हिक्का धिक्कार चिक्कन सचिक्कन।
क् त क्त भक्त भक्ति शक्ति वक्ता शक्तिदायक।
क् ष क्ष वृक्ष लक्षण भक्षण रक्षण भिक्षा भिक्षु।
ग् द ग्द वाग्दान वाग्देवी सम्यग्दर्शन।
ग् ध ग्ध दग्ध दुग्ध मुग्ध मुग्धा विदग्ध।
ङ् क ङ्क शङ्का पङ्क अङ्क अङ्कित शङ्कित।
ङ् ख ङ्ख शङ्ख पङ्खा शृङ्खला शङ्खध्वनि।
ङ् ग ङ्ग अङ्ग वङ्ग गङ्गा सङ्ग।
ङ् घ ङ्घ लङ्घन जङ्घा लङ्घित उल्लङ्घन।
च् च च्च उच्च उच्चपद बच्चा सच्चा सच्ची सच्चरित्र।
च छ अच्छ स्वच्छ तुच्छ अच्छ आच्छादन।
च् ञ च्ञ च्ञा।
ज् ज ज्ज लज्जा लज्जित सज्जित सज्जनता।

ञ् ञ ज्ञ ज्ञान अज्ञान यज्ञ अज्ञ सर्वज्ञ ।
ञ् च ञ्च अञ्चल चञ्चल वंचक संचय पंच ।
ञ् छ ञ्छ वाञ्छा वाञ्छित मनवाञ्छित ।
ञ् ज ञ्ज व्यञ्जन अञ्जन खञ्जन रंजन ।
ञ् झ ञ्झ साञ्झ झञ्झा झंझित झंझावात ।
ट् ट ट्ट पट्टी टट्टी खट्टा खट्टी अट्टहास ।
ट् ठ ट्ठ चिट्ठी लट्ठा गट्ठा पट्ठा इकट्ठा ।
ड् ग ड्ग खड्ग खड्गधार खड्गहस्त पड्गुण ।
ण ट ण्ट घण्टा कण्टक कण्टाल वण्टक ।
ण् ठ ण्ठ कण्ठ शुण्ठि शुण्ठिपाक लुण्ठिपात ।
ण् ड ण्ड खण्ड घमण्ड पण्डित मण्डित प्रचण्ड
त् क त्क सत्कार-सत्कुल मत्कुण उत्कण्ठा ।
त् त त्त पत्ता कुत्ता सत्ता उत्तम उत्तर सर्वोत्तम ।
त् थ त्थ कत्था उत्थित उत्थान उत्थापना ।
त् प त्प सत्पात्र सत्पुत्र सत्पुरुष उत्पात ।
त् स कुत्सित चिकित्सा सत्संगति ।
द् ग द्ग उद्गार सद्गति पुद्गल गद्गदवचन ।
द् घ द्घ उद्घाट उद्घाटित उद्घन ।

वे सब जगह धिकार पाती हैं। माता पिता और सासु ससुरकी सेवा भक्ति तनमनसे करनी चाहिये। मांस मछली भक्षण करनेवाले म्लेच्छ सरीखे होते हैं। वाग्दान देकर निराश करना सत्पुरुषोंका कार्य नहीं है । गोदुग्धकी समान शरीरका हितकारी अन्य पदार्थ कोई नहीं है। हिंसा चोरी झूंठ कुशील और लोभ इन पांचों पापोंके त्यागीको राज्यदंडकी शंका (भय) नहीं है। दासत्वशृङ्खलासे जेलखानेकी बेड़ी अच्छी है। सत्संगतिके गुणोंकी संख्या कोई नहिं कर सक्ता । गुरुजनोंकी आज्ञा उलंघन करनेवाली औरतें विपत्ति आनेपर पछताती हैं। सच्चरित्रा कन्या ही दोनों कुलोंका भूषण हैं ५६

व रहनेका घर सदा स्वच्छ

करनेसे मरजाना

गहना शील

१ दोहा—तुलसी

जा दिन

दान अभयदान व आहारदान इन चारों दानों-
मेंसे ज्ञानदान ही मुख्य दान है । लोभी गुरु
केवलमात्र धर्म और धनके वंचक (ठग) होते
हैं। परद्रव्य ग्रहण करनेकी इच्छा स्वप्नमें भी
नहि करनी । जो औरतें अच्छे २ व्यञ्जन वनाना
जानती हैं, वे ही सुघड़ हैं । झंझामें घरसे वाहर
होना उचित नहीं । औरतोंका अट्टहास करना
(जोरसे हँसना) वहुत वुरा कुलक्षण है। चिट्ठी
लिखकर एकवार जरूर पढ लिया करो। कठिन
तपस्या करना खड्गधारपर सोनेकी वरावर है।
दिनभरमें कमसे कम दो घंटा तो सवको ही
पढना चाहिये। पढ़नेकी उत्कंठाके विना विद्या
नहि आती। मूर्ख औरतें ही रूपादिकका घमण्ड
करती हैं। घर आये शत्रुका भी सत्कार करना
चाहिये। सवसे उत्तम वे ही हैं, जो विद्या पढना
सुरू करके अधवीचमें नहीं छोडतीं हैं । हित-
कारी आज्ञा वालककी भी उत्थापन करनी
अयोग्य है। दान सत्पात्रको ही देना चाहिये।

सत्संगति व दयामयी धर्म कदापि नहिं छोडना चाहिये। अपने मुखसे अपने तो गुण और परके अवगुण कदापि उद्घाटन नहिं करना चाहिये। इस पुस्तकके प्रचार करनेका उद्देश औरतोंको पढाकर सदाचारिणी बनाना है। सच्चे देव सच्चे गुरु और अहिंसामय धर्मका श्रद्धान करना सो सम्यग्दर्शन है, अद्‌भुत पतिव्रता सीताजी ही थीं। मूर्ख-माता पिताओंकी संतान भी मूर्ख रहती है। लोभी गुरु भोले जीवोंको कुपन्थमें चलानेवाले होते हैं, सत्पुरुष चन्दनकी समान परोपकारी होते हैं। परदेशमें विद्यारूपी धन ही बन्धुकी तरह सहायक होता है, इस पुस्तकको समाप्त किए विना दूसरी पुस्तक कदापि नहिं पढना। जो सर्वज्ञ वीतरागी (अठारह दोषरहित) और सबका हितकारी हो, वही सत्यार्थ आप्त (सच्चा देव) है। प्राकृत भाषामें आत्माका अप्पा, आदा और कल्पामरका कप्पामर हो जाता है ईप्सितकार्य (मनोवांछितकार्य) उत्तम यत्नके

विना सफल नहिं होता । काने खञ्ज कुब्जको देखकर हंसी करना अनुचित है। अपशब्द व्यवहार करना अभद्रताका सूचक है । आरब्ध (प्रारम्भ किये हुये) कार्यको अधवीचमें न छोडकर शीघ्र ही समाप्त करो। सम्पदावालोंके प्रायः सब ही दास हो जाते हैं । माता पिताओंके भले बुरे आचरण सन्तानरूपी दर्पणमें प्रतिविम्बित होते हैं। लोकनिंदाके भयसे विद्या पढ़ना प्रारम्भ नहिं करनेवाली औरतें मूर्ख होती हैं। समाचारपत्रोंके पढनेसे घरवेठे सब मुल्कोंकी खबरें मिलती हैं और अनेक प्रकारके लाभ होतें हैं। फाल्गुण और चैत्र मासको वसंत ऋतु कहते हैं। कुल्टा औरतके पास कभी खडी मत रहो। पढते समय अल्पसी भी गल्प (वातें) करना नहिं चाहिये । विपत्तिमें प्रगल्भता (हिम्मत) ही काममें आती है। देव गुरु धर्मका स्वरूप निश्चय करके (परीक्षाकरके) धारण करना चाहिये। समस्त दुश्चरित्रोंका (कुव्यसनोंका) राजा

जूआव्यसन है। कपट करके छिपालेना बडा दुष्कर कार्य्य है। इस कारण मनुष्य मात्रको निष्कपटतापूर्वक ही रहना चाहिये। किसी भी अनिष्ट कार्य्य करनेकी वासना भी मनमें मत आने दो। जेष्ठ वैशाखकी गर्म धूपसे अपनेको बचाते रहो। शुभकार्य्यको शीघ्र ही निष्पादन करो, विद्यापढनेका परिश्रम कदापि निष्फल नहिं होता। संस्कृत भाषा समस्त भाषाओंकी माता है। जो कोई जीव अजीव पुण्य पाप स्वर्ग नरक और बंध मोक्षको नहिं मानते उनको नास्तिक कहते हैं। स्वस्थ अवस्थामें ही बुद्धि स्थिर रहती है। घरमें परस्पर मेल रखनेसे ही घरकी शोभा और सुखकी प्राप्ति होती है।

चौपाई १६ मात्रा।

वह तिय नित धिक्कार जु पावे।
जो शिक्षा विन वक्त गमावे॥
है निःशङ्क दुग्ध गुणधारी।
अङ्गविषे अतिशय बलकारी॥ १॥

जो तुम सुख चाहो संसारी ।
पति आज्ञा लवहु मत प्यारी ॥
प्रीति स्वच्छ करत सचाई ।
कुलतियमें लज्जा अधिकाई ॥ २ ॥
धन सञ्चयसे वाञ्छित पावें ।
खट्टे व्यञ्जन रोग वढावें ॥
पतिको चिट्ठी लिख अति नीकी ।
तातें प्रीति पडे नहिं फींकी ॥ ३ ॥
मूरख सुत कण्टक सम होवे ।
खोटी उत्कंठा घर खोवे ॥
पण्डित जनका कर सत्कार ।
जो उत्तम गुणके भंडार ॥ ४ ॥
पतिआज्ञा कवहु न उत्थापहिं ।
सुख यशधन संग्रह है तापहिं ॥
सत्पुरुषनका पढहु चरित्रा ।
सद्गति अरु मन होय पवित्रा ॥५॥
उद्घाटन परदोष न कर हू ।
कर सद्दान पात्र दुख हर हू ॥

अद्भुत श्रद्धा कर गुरु जनमें ।
रख सन्तोष सदा निज मनमें ॥ ६ ॥
पढि सद्ग्रंथ मंदमति हानी ।
ते तिय सद्गुणकी है खानी ॥
अन्ध कुब्जकी तृप्ति करै है ।
सो तीय ईप्सित सुक्ख वरै है ॥ ७ ॥
जो मुखपर अपशब्द न लावे ।
सो तिय इह यश सम्पति पावै ॥
जो सम्वादपत्र नित पेखै ।
सो घर बैठ मुल्क सव देखै ॥ ८ ॥
कल्पित गल्प जल्प मत वहना ।
सत्य कथा निश्चय कर कहना ॥
हो निष्कपट इष्टजन माहीं ।
निष्ठुरतिय-चित करुणा नाहीं ॥ ९ ॥
अति सुगन्ध पुष्प मन मोहै ।
यत्न कभी निष्फल नहिं हो है ॥
स्वस्थचित्त हो पुस्तक पेखो ।
खराव पुस्तक कभी न देखो ॥ १० ॥

दयाचंद।

एक दिन वैशाखकी दुपहरियामें दयाचंद नामका जैनीका लड़का आमके पेड़ तले खड़ा था, थोड़ी देरमें क्या देखा कि एक विच्छु पेड़परसे गर्म वालूमें पड़कर तलमलाने लगा। उसे देखते ही दयाचन्दके चित्तमें दया आई कि इसे छांहमें नहिं रक्खा जायगा तो यह अभी देखते देखते मर जायगा। अतएव जिसप्रकार बने, इसको बचाना चाहिये, ऐसा विचार कर और कोई समीचान उपाय न देख उसने तडफते हुए विच्छूको अपने हाथमें उठाकर छांहमें रखना चाहा परंतु विच्छूने दयाचंदको हथेलीमें बड़े जोरसे डंक मारा जिसकी पीड़ासे ज्योंही वह व्याकुल हुआ घवराया त्यों ही उसके हाथसे वह विच्छू गर्म वालूमें गिरकर फिर तड़फड़ाने लगा। दयाचंदके चित्तमें फिर भी स्वाभाविक दयाने जोर किया तो अपने दर्दको भूलकर उसने झट बांये हाथमें उसे उठालिया विच्छूने फिर भी जोरसे डंक मारा तो उसकी असह्य पीड़ाके कारण हाथके हिल जानेसे वह विच्छू फिर तप्तायमान वालूरेतमें गिरकर तलमलाने लगा। उसे तलमलाते देख दयाचंदने अपने मनमें कहा कि हाय? मैं बड़ा दयाहीन हूं जो इस तुच्छ जानवरके भी प्राण नहिं बचा सका? धिक्कार है मेरे जैनीपनेको। इसप्रकार विचार करके अपने मनको कड़ा किया और शीघ्रतासे उस विच्छूको उठाकर छांहमें रखना चाहा कि विच्छूने फिर भी उसके हाथमें एक डंक मार दिया परंतु अबकी वार वह हाथमेंसे छांहमें गिर पड़ा।

उस समय वहींपर एक दयाहीन पुरुष खड़ा खड़ा चुपचाप यह तमासा देख रहा था। उसने दयाचंदके हाथमें तीसरीवार बिच्छूके काटते ही कहा कि—अय लड़के! तू बड़ा मूर्ख है, जो इस दुष्टको बार बार उठाता और आपको कटवाता है। और इसका स्वभाव ही दुष्ट है, ऐसे जानवर पर दया करनेसे क्या लाभ है? देख। तूने दया करके इसको बचानेके लिये तीन वार उठाया परंतु इस दुष्टने तीनों ही बार तेरे हाथमें डंक मारा सो भाई! इस दुष्टको तो जहां देखा मार डालना ही ठीक है। यह बात सुनकर दयाचंदने कहा कि—मुझे तो तुम ही बड़े मूर्ख दीखते हो क्यों कि तुम इसको दुष्टस्वभाव बताते हो परंतु यह दुष्टस्वभाव कदापि नहीं है, किंतु अज्ञानी है। इसको इतना ज्ञान कदापि नहीं है कि—यह तो मेरा हित करनेवाला है और यह अहित करनेवाला है। इसका तो स्वभाव ही ऐसा है कि जो कोई भी इसको छेड़ता है वा तकलीफ देता है तो अपनी रक्षाके लिये अपनी पूंछको (डंकको) हिला देता है। यह द्वेष भावसे डंक नहिं मारता है जो इसे दुष्टस्वभाव कहा जाय। इसको तो यह भी मालूम नहीं कि मेरी पूंछमें विष है और वह मनुष्योंको कष्ट देता है। और यदि तुमारे कहनेसे थोड़ी देरके लिये इसको दुष्टस्वभाव मान भी लिया जाय तब तुम इतना तो विचार करो कि—जब यह अपने दुष्टस्वभावको नहीं छोड़ता है तो मैं अपने स्वाभाविक दयाभावको (अच्छे स्वभावको) क्यों छोड़ूं जो इसके प्राण बचानेमें समर्थ होता हुआ भी मैं अपने सन्मुख

तड़फ २ कर क्यों मरने दूं ? दयाचन्दका यह उत्तर सुनकर वह पुरुष निरुत्तर व लज्जित होकर चल दिया और दयाचंद बड़े यत्नसे उस बिच्छूको रुईकी खोहमें रखकर अपने घरको चला गया। घर जाकर अपने हाथका इलाज करालिया।

हे कन्याओ, देखो ! दयाचंदने अपना कैसा उत्तम दया भाव प्रगट किया। यद्यपि प्राणी मात्रका स्वभाव दयामयी है परंतु तुम्हारा व तुम्हारे बड़ोंका तो धर्मही दयामय जैनधर्म है, इस कारण चाहे कैसा हो दुष्टस्वभाव अथवा अपना शत्रु भी क्यों न हो, सदैव दयाभाव रखकर उसका हितसाधन ही करना उचित है। आज कल बहुतसे दयाहीन मनुष्य कह दिया करते हैं कि— "जिघांसंत जिघांसीयाव" अर्थात् "हंतेको हनिये पाप दोष नहि गनिये" सो ऐसे दयाहीन पुरुषोंको कहावतोंपर विश्वास नहि करके सांप बिच्छू खटमल डांस मच्छर तथा सिंह व्याघ्रादि हिंस्र जंतु भी यदि तुमारेपर आक्रमण करें तो जहां तक हो सके, उनको तकलीफ न देकर अपनी जान बचालेनी चाहिये। क्रोधके वशीभूत हो उनको दुष्ट समझ जानसे मारनेका संकल्प करना कदापि उचित नहीं। तथा अपने दुश्मनपर कभी कोई आपत्ति आन पड़े तो जहां तक अपनी सामर्थ्य हो, उसकी सहायता करनेमें कदापि नहि चूकना चाहिये। क्योंकि यह महापुरुषोंका स्वभाव अर्थात् जैनियोंका धर्म है।

पाठ नवमां तीन व्यञ्जनोंका संयोग ।

क् ष् ण् क्ष्ण तीक्ष्ण तीक्ष्णबुद्धि, तीक्ष्णता ।
क् ष् म क्ष्म लक्ष्मी लक्ष्मण ।
ज् ज् व ज्ज्व उज्ज्वल समुज्ज्वल ।
त् त् व त्त्व तत्त्व महत्त्व सत्त्व, अतत्त्व ।
त् म् य त्म्य महात्म्य तादात्म्य ।
र् द् द र्द्र आर्द्रित ।
र् द् ध र्द्ध वर्द्धन निर्द्धन वर्द्धमान संवर्द्धन ।
ष् प् र ष्प्र दुष्प्राप निष्प्रयोजन निष्प्रकंप ।
स् त् र स्त्र स्त्री परस्त्री शास्त्र शस्त्र शास्त्री
विचारमें मग्न हुए विना बुद्धि तीक्ष्ण नहिं होती
अपव्ययीके घरपर लक्ष्मी कदापि नहिं ठहरती ।
आकांक्षा ही दुःखका असाधारण लक्षण है ।
अपने परिणाम सदैव उज्ज्वल रखने चाहिये ।
आलस्य करनेसे महात्माओंका भी महत्त्व नष्ट हो जाता है । सच्चे महात्माओंका माहात्म्य छिपा नहिं रहता । पतिव्रता स्त्रियोंको इंद्र भी नमस्कार

करता है। प्रातःकाल और संध्या समय अपने इष्टदेवका स्मरण अवश्यमेव करना चाहिये। देशोन्नति वा सम्प्रति स्त्रीशिक्षाके प्रचारसे ही देशोन्नति हो सक्ती है। विद्या पढनेवाली कन्या वा स्त्रियोंको निरन्तर पढने लिखनेकी ही चर्चा करना चाहिये। सांसारिक कार्य्योंमें ही मूर्छित होजाना उचित नहीं अर्थात् घंटे दो घंटे पारमार्थिक कार्य्य (धर्मकार्य्य) भी करने चाहिये। अन्यायसे उपार्जन किया हुआ धन दशवर्ष वाद अवश्यही नष्ट हो जाता है। निर्दिष्ट समयपर भोजनादि करनेसे रोग नहिं होता। तनमनधनसे परोपकार करनाही परम धर्म है। तन मन वचनसे परधन हरणके त्यागको अचौर्य्य व्रत कहते हैं। बालकपनमें समस्त कार्य्य छोड विद्योपार्जन करना ही सर्वापेक्षा मुख्य है। दुष्प्राप्य विषयकी आशा करनी निष्प्रयोजन है। जो स्त्रियें धर्मशास्त्र नहिं पढतीं वे कदापि सदाचारिणी व सुखी नहिं हो सक्तीं।

झूठ बोलनका फल।

आगरेमें एक लड़की अपने मकानकी छतपर बैठी एकवर्षके अपने भाईको खिलाया करती थी। वह दूसरे तीसरे दिन अचानक ही झूठ मूट चिल्ला उठती कि "अरी अम्मा! दौड़ियो भइयेको एक बंदर लिये जाता है।" जब उसकी माता घबड़ा कर सब काम छोड़ छतपर जाती तो वह लड़की हंस देती। इसीप्रकार तीन चार बार झूठा शोर करके अपनी माताको बुला लिया था।

दैवयोगसे एक दिन सचमुच ही एक बड़ासा बंदर आकर उस लड़कीको नोचने खसोटने लगा तो वह लड़की फिर भी पहिलीकी तरह चिल्लाकर बोली कि—"अरी अम्मा! जल्दी दौड़ियो! आज सचमुच ही एक बड़ासा बंदर आ गया, और मुझे खसोटकर अब भइयेको लिये जाता है" उसकी माताने पहिलेकी तरह आज भी उसके चिल्लानेको झूठ समझा और अनेक प्रकारकी दीनताके साथ प्रार्थना करने पर भी वह लड़की लड़केको बचानेके लिये छतपर नहिं गई। जिसका फल यह हुआ कि—वह बंदर उस लड़कीको अधमरी करके उस बच्चेको उठाकर ले गया और दुमज्ले मकानपरसे पाखानाकी गलीमें पटक दिया जिससे वह लड़का गिरते २ ही मर गया।

इस कहानीसे यह बात सबको याद रखना चाहिये कि जो लड़की लड़के हमेशह झूठ बोलते हैं, वे कभी एक आध बार सच बोलें तो भी उनकी बातपर कोई विश्वास नहिं करता और उस झूठके पापसे वे इस लोक और परलोकमें अवश्य दुःख पाते हैं।

दशमा पाठ

याद रखने योग्य शिक्षा व भावनी।

१। ऐसा कोई भी कार्य्य नहिं करना चाहिये जिससे कि दूसरे जीवोंको मानसिक वा कायिक पीड़ा हो क्योंकि ऐसे कार्य्य करनेवाली स्त्रीको सब कोई हिंसनी और पापनी कहते हैं।

२। ऐसे वचन कभी नहिं बोलना चाहिये जिससे कि अपनी व परकी हानि हो। क्योंकि ऐसे वचन कहनेवाली स्त्रीको असत्यवादिनी (झूठी) और मायाचारिणी कहते है।

३। रक्खी हुई गिरी हुई भूली हुई अनामत रक्खी हुई पराई वस्तु कदापि ग्रहण नहिं करना चाहिये क्योंकि पर वस्तुको ग्रहण करनेवाली स्त्रियें चोरटी और ठगनी कहलाती हैं।

४। किसीकी सम्पत्ति और गहना देखकर लोभ (लालच) कदापि नहि करना चाहिये, क्योंकि लोभ करनेवाली स्त्रियोंको पाप करनेमें भय नहीं रहता और लोभ करनेवाली स्त्रियें हमेशह दुःखिनी ही रहती हैं, इस कारण अपने भाग्यसे जो कुछ प्राप्त हुवा है, उसीमें संतोष धारण करना चाहिये।

५। उठते बैठते फिरते सोते अर्थात् हर समय समस्त जीवों-का भला चिन्तवना चाहिये अपनी सामर्थ्यानुसार तन मनसे परका हित करना चाहिये। इस प्रकार हित चाहनेवाली स्त्रियोंको हितैषिणी परोपकारिणी व धर्मपरायणा आदि कहते हैं

६। जो स्त्रियें प्रति समय परका अकल्याण चाहती रहत हैं और दूसरोंके अवगुण ढूंढती रहती हैं, उनको दुष्टिनी पापिनी

और बदमाश आदि कहते हैं। ऐसी स्त्रियोंकी सङ्गतिमें कदापि नहि बैठना।

७। जो स्त्रियें हितकारी प्रियवचन बोलती हैं, उन्हें सब कोई प्रियवादिनी मिष्टभाषिणी आदि कहते हैं, ऐसी स्त्रियोंका कोई भी दुश्मन नहि होता।

८। क्रोध कदापि नहि करना चाहिये, क्योंकि क्रोध करने वाली स्त्रियोंकी अनेक स्त्रियें दुशमन हो जाती हैं और वे हर समय अनेक प्रकारके दुःख देने व झूठा कलंक लगानेमें तत्पर रहती हैं, अतएव कोई गाली दे, या कुवचन कहे तो क्षमा धारणकर चुप रहना चाहिये क्योंकि क्षमारूपी ढाल जिसने ओढली है उसको दुशमनोंके वचनरूपी बाण कदापि नहि लग सक्ते जैसे बिना घासफूसके पत्थरपर पड़ी हुई अग्नि अपने आप शांत हो जाती है। इस कारण क्षमारूपी ढालको ओढकर क्रोधके वशीभूत कदापि नहि होना चाहिये।

९। समयका एक निमेषमात्र भी वृथा नहि खोना चाहिये। क्योंकि गया हुआ समय फिर करोड़ यत्न करनेपर भी हाथ नहि आता। इस कारण पढ़नेका अमूल्य समय जो बालकपन है उसका एक पल भी वृथा नहि खोना। अहोरात्र प्रतिसमय विद्या पढनेमें ही ध्यान लगाना चाहिये, क्योंकि विद्या ही सर्वोत्तम पदार्थ है, विद्यासे ही इस लोकमें सुख यश और परलोकमें अनुपम सुखकी प्राप्ति होती है। विद्या ही माता समान अपनी व अपने पातिव्रत धर्मकी रक्षा करती है। विद्या ही पिताके

समान हितमें लगाती है। विद्या ही सखीके समान चित्तका रञ्जन कर समस्त दुःखोंको दूर करती है विद्याही दशों दिशाओंमें सीता द्रौपदी लीलावती 'खन्ना' आदिके यशको तरह अतुल्य यशको प्रकाश करती है। विद्या ही कल्पलताकी समान मनवाञ्छित सुख देती है। विद्या ही अपूर्व गहना है जिसको धारण करनेवाली स्त्रियें अतिशय शोभाको प्राप्त होती हैं। विद्या ही एक अनुपम आभूषण है जो कि दूसरेको दान करने पर भी बढ़ता रहता है, विद्या ही अति उत्कृष्ट अलंकार है कि जिसको चोर चुरा नहिं सक्ता, सास और जिठाणियें घटा नहिं सक्ती। विद्या ही सर्वोत्कृष्ट धन है जिसको राजा व दस्युगण (डकैत) जबरदस्ती नहिं छीन सक्ते। विद्या ही हितकारिणी सखी है, जो विपत्तिमें हर समय सहाय करती है इत्यादि अनेक गुणोंकी देनेवाली विद्या है इस कारण विद्याके पढ़ने पढ़ानेमें समस्त कार्य छोड़ कर तन मन धन और समयसे तत्पर रहना चाहिये। दुष्ट लोग और खराब स्त्रियें चाहे जो कुछ कहें, परन्तु तुम एककी भी नहिं सुनना इस पुस्तकके बाद कमसे कम स्त्रीशिक्षाकी ४ पुस्तकें और तीनभाग जैनधर्मशिक्षक तो अवश्य ही पढ़ लेना।

लावनी चाल खड़ी ।

इसकी प्रत्येक कड़ी दो दो बार कहनी चाहिये ।

हे बहन ! ध्यान धर सुनो, अरज यह मेरी । विद्या पढ़कर नरभवका, फल तू लेरी ॥ टेर ॥ यह मनुष जन्म है, दुर्लभ, जगमें आली । इसमें भी कठिन सत्संगति, अजब निराली ॥ मत खोना बहन यह उत्तम अवसर खाली । पीछे पछताना पड़े, अमर खो वाली । (बालपन) सब शंका तज कर, पढ़नेमें चित देरी । विद्या पढ़कर नरभवका फल तू लेरी ॥ हे बहिन ! ध्यान धर सुनो अरज, यह मेरी ॥१॥ विद्याकी बराबर कोई नहिं, नीका गहना ॥ इसके आगे सब गहने, फीके बहना। पढ़नेके हेतु अति कटुक वचन भी सहना ॥ दुष्टनके वचन सुन करके चुप हो रहना । वेहि करेंगे कुछ दिन बाद बड़ाई तेरी ॥ विद्या पढ़कर नरभवका फल तू लेरी । हे बहन ! ध्यान धर सुनो अर्ज यह मेरी ॥२॥ विद्यासे विनय अरु धर्म लगन बढ़ जावै । विद्यासे जगमें सुख सज्जन अति पावै ॥ विद्या सब देशोंमें सन्मान दिलावै । विद्याही सबको मुक्तितक पहुंचावै ॥ इसकारण तू अब तन मनसे पढ़ परी । विद्या पढ़कर नरभवका फल तू लेरी । हे बहन ! ध्यान धर सुनो अरज यह मेरी ॥३॥ विद्यासे कसीदा आला वगैरह आदि । विद्यासे सास जिठानी वश हो जावै ॥ विद्यासे लड़ाई कभी न होने पावै । विद्यासे धर्मकी चर्चा नित मन भावै ॥ विद्यासे औरतें सब होंगी तेरी चेरी (लो) । विद्या पढ़कर नरभवका फल तू लेरी । हे बहन ! ध्यान धर सुनो अरज यह मेरी ॥ ४ ॥

जैनग्रंथरत्नाकर ग्रंथमालाका

भैया भगोतीदासजी कृत प्रथमरत्न

दूसरीवार छप गया **ब्रह्मविलास** छपगया !

बंबईके जैनग्रंथरत्नाकर कार्यालय आजसे २५ वर्ष पहिले स्थापित हुआ था उसमें सबसे पहिले यही ग्रंथ छपा था यह शीघ्र बिक गया था अनेक भाइयोंके इस ग्रंथके दर्श[illegible] हो गये। अतएव हमने इसको दूसरी बार शोलापुरके [illegible] शुद्धताके साथ छपाया है। अबकी बार जिल्दसहित तैयार इस कारण न्योछावर भी॥) बढ़ा कर २) रुपया रक्खा जो महाशय शास्त्र दान करनेके लिये इकट्ठी प्रति[illegible] PRESS, इनको व्यापारी कमीशनसे भेजा जायगा जो कमसे [illegible] मगावेंगे उनको पांचके मूल्यमें ६ प्रति भेजी जाय [illegible] मंगाना हो शीघ्र मगालें। विलंब करनेसे यह ग्रंथ [illegible] मिलेगा इसमें सुंदर कविता मय अध्यात्मो रसका छा[illegible] ग्रंथ है।

सब तरहके पत्र व्यवहारका पता—

पन्नालाल बाकलीवाल,

मालिक—जैनग्रंथरत्नाकर कार्यालय,

९ ए० विश्वकोष लेन, पो० बागबाजार, कलकत्ता।

तथा—चंदावाड़ी बंबई नं० ४

श्रीवीतरागाय नमः ।

जैनस्त्रीशिक्षा

द्वितीय भाग

लेखक—

पूज्य पं०—पन्नालाल बाकलीवाल

सुजानगढ़निवासी

प्रकाशक—

नेमिचंद बाकलीवाल

मालिक—पवित्रजैनग्रंथरत्नाकरकार्यालय

१५० विश्वकोष लेन बाघबाजार कलकत्ता ।

दूसरीवार २००० } वीर नि० सं० २४५३ { मूल्य ॥)

Printed and Published by
Srilal Jain
the JAIN SIDDHAHNT PRAKASHAK PRESS,
9, V[illegible]
Calcutta